**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2019; 5(11): 44-47
www.allresearchjournal.com
Received: 15-09-2019
Accepted: 19-10-2019

**Kamlesh**
Assistant Professor, History Department, D.A.V. Centenary College, Faridabad, Haryana, India

**Correspondence Author:**
**Kamlesh**
Assistant Professor, History Department, D.A.V. Centenary College, Faridabad, Haryana, India

# प्रेरनादायी प्राचीन भारत

**Kamlesh**

## प्रस्तावना

समाज के उज्जवल भविष्य के लिए हमें अतीत के इतिहास का अध्ययन करना आवश्यक है। अतीत का अध्ययन कर हम न केवल अपनी बहुमूल्य विरासत को समझ सकते हैं, बल्कि उसका प्रयोग करके अपने भविष्य को भीनिश्चय ही उज्जवल बना सकते हैं। प्राचीन भारत का इतिहास वर्तमान समस्याओं का समाधान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इससे हमें ज्ञान प्राप्त होता है कि मानव ने किस प्रकार अपने बुद्दि का इस्तेमाल करके न केवल उपलब्ध संसाधनों का दोहन करना सीखा, बल्किप्राकृतिक संसाधनों से उसने अपने अस्तित्व को भी बनाये रखा ।

प्राचीन भारत की जानकारी हमें कई प्रकार के स्त्रोतों से होती है।जैसे कि साहित्यिक स्त्रोत, पुरातात्विक स्रोत एवं विदेशी यात्रियों के विवरण । सबसे पुराने स्त्रोत्र हैं वैदिक ग्रंथ । इनमे मुख्य है - वेद, ब्राह्मण, संहिता, उपनिषद एवं स्मृतियां । रामायण एवं महाभारत हिन्दुओं के महाकाव्य है।लौकिक साहित्य जैसे कि अर्थशास्त्र, इंडिका,मुद्राराक्षस, कालिदास के नाटक, भास के नाटक, हर्षवर्धन की रचनाएं और अन्य अनेक प्रकार की पुस्तकें, जोभिन्न-भिन्न समय पर इतिहासकारों द्वारा लिखीगई है। पुरातात्विक स्रोतों में मुख्यतः सिक्को, मुद्राओं, अभिलेखों एवं इमारतों को शामिल किया जाता है।प्राचीन भारत की सबसे महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई है, अशोक के अभिलेखों सेएवं भिन्न-भिन्न राजाओ के द्वारा ढाले गए सिक्कों से, और इसके अलावा प्राचीन काल में विदेशी यात्रियों द्वारा दिए गए यात्रा वृतांत भी भारत के अतीत की बहुमूल्य जानकारी प्रदान करते है। इन्हीं स्त्रोंतोके माध्यम से हम प्राचीन भारत की उन बहुमूल्य देनों का वर्णन करेंगे, जिन्हें भविष्य की समस्याओं का समाधान करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

वैसे तो प्राचीन भारत अनगिनत उपलब्धियों से भरा हुआ है, लेकिन हम केवल उन्हें उपलब्धियों या विशेषताओं का वर्णन करेंगे जिनका प्रयोग करके भविष्य

को न केवल उज्जवल बनाया जा सकता है, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को भी मजबूत बनाया जा सकता है।

**अनेकता में एकता**

प्राचीन भारत अनेकानेक मानव प्रजातियों का संगम रहा है। सबसे पहले भारत में मध्य एशिया से आर्य आकर बसे और उसके बाद हिंदी यूनानी, शक, पल्लव, कुषाण, तुर्क, मंगोल एवं मुगल।हर प्रजाति ने भारतीय सामाजिक व्यवस्था, शिल्प कला, वास्तुकला एवं साहित्य के विकास में यथाशक्ति अपना-अपना योगदान दिया। ये सभी जातियां भारतीय समुदाय में इस प्रकार से घुलमिल गई कि उन्हें मूल भारतीयों से अलग करना मुश्किल प्रतीत होता है। प्राचीन भारतीय संस्कृति की विलक्षणता रही है कि इसमें उत्तर और दक्षिण तथा पूर्व एवं पश्चिम के सांस्कृतिक उपादान समेकित हो गए हैं। हिंदू धर्म भारत का सबसे पुराना धर्म है। बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म की उत्पत्ति भी भारत में ही हुई। आज भले ही बौद्ध धर्म भारत से लुप्त हो गया है लेकिन अभी भी दक्षिण पूर्व एशिया में और चीन में यह धर्म अपनी साख जमाए हुए है। प्राचीन भारत में भिन्न-भिन्न धर्म को मानने वाले, अलग-अलग भाषाएं बोलने वाले, अलग-अलग संस्कृतियों के लोग मिलजुलकर इकट्ठा रहते थे। प्राचीन भारत की अनेकता में एकता, वर्तमान एवं भविष्य के लिए बहुत बड़ी सीख है, क्योंकि जब तक भारत एक है, तभी तक भारतीयों का विकास संभव है।

**नगर नियोजन**

वर्तमान समय में भारत की जनसंख्या जिस तेज गति से बढ़ रही है उतनी ही तेज गति से लोगों का शहरों की ओर पलायन बढ़ता जा रहा है।इतनी बड़ी संख्या में लोग शहरों में आकर बसते जा रहे हैं, जिससे कि शहरों की व्यवस्था बहुत खराब हो रही है। शहर गंदगी के ढेर बनते जा रहे हैं। बरसात के दिनों में नालियों का जाम हो जाना आम बात हो गई है। इस समस्या का सबसे बेहतर समाधान प्राचीन हड़प्पा सभ्यता से प्राप्त होता हैं। हड़प्पा सभ्यता के लोगों की नगर निर्माण योजना समकालीन सभ्यताओ से बहुत आगे थी।हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने अपने नगरों को योजनाबद्ध तरीके से बसाया था। हड़प्पाकी सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थी। हवा चलने पर ये सड़कें स्वंयम साफ़ हो जाती थी। हर घर में नालियों की व्यवस्था थी। घरों का गंदा पानी नालियों से होकर मुख्य सड़क के नीचे बिछी हुई सीवर लाइन में आता था। हर घर के अंदर एक कुआं होता था और एक स्नानागार। ऐसी सफाई व्यवस्था उस समय क्रीट दीप को छोड़कर अन्यत्र कहीं भी देखने को नहीं मिलती, जहां नालियों को सीढ़ियों से ढक कर रखा जाता था। इस प्रकार वर्तमान शहरों का नियोजन यदि हड़प्पा कालीन नगरों की तरह किया जाए तो काफी हद तक हम अपने शहरों को नियोजित कर सकते हैं तथा अपनेनगरों को स्वच्छ रख सकते है, जो आज भारत की सबसे बड़ी समस्या है।

**वैज्ञानिक जीवन पद्धति एवं रोगों का उपचार**

जैसा कि हम सब जानते हैं, वैदिक कालीन मनुष्य का जीवनचार आश्रमों में बटा हुआ था। जीवन के पहले 25 वर्ष ब्रह्मचर्य आश्रम में व्यतीत करने पड़ते थे, जिसमें केवल शिक्षा ग्रहण की जाती थी।आगामी 25 वर्ष गृहस्थ आश्रम के लिए सुरक्षित थे, जिसमें व्यक्ति विवाह संस्कार के बाद धर्म, अर्थ और काम की तृप्ति करता था। आगामी 25 वर्ष वानप्रस्थ अर्थात वन में व्यतीत करने होते थे और अंतिम 25 वर्ष सन्यास ग्रहण करके मोक्ष प्राप्ति के लिए सुरक्षित किए गए थे। जीवन का ऐसा विभाजन वैज्ञानिक माना जाता है जिसमे हर कर्म के लिए एक निश्चित समय निर्धारित किया गया है। वर्तमान

समय में भौतिकतावाद ने मनुष्य को अपने चक्रव्यूह में जकड़ लिया है। उसकी दिनचर्या ने उसे तनावग्रस्त बना दिया है। यद्यपि वैदिक कालीन आश्रम व्यवस्था का पूरी तरह से पालन करना असंभव है लेकिन फिर भी यदि कुछ नियमों का आंशिक रूप से ही पालन किया जाए, तो भी मनुष्य काफी हद तक तनाव मुक्त हो सकता है और शांतिपूर्वक अपना जीवन व्यतीत कर सकता है।

आज आयुर्वेद पर सारी दुनिया विश्वास करने लगी है । आयुर्वेदिक उपचार सस्ता भी है और कारगर भी है। इसलिए इसका ना केवल अपने ही देश में, बल्कि दूसरे देशों में भी प्रचार प्रसार किया जाना चाहिए। इससे हम न केवल गरीब देशों को सस्ती दवाइयां उपलब्ध कराकर उनकी मदद कर सकते हैं बल्कि अपने देश के लिए भी विदेशी मुद्रा का अर्जनकर सकते हैं।

योगासन पद्धति प्राचीन भारत की ही देन है। आज योग के महत्व को कौन नहीं जानता। योग के द्वारा गंभीर से गंभीर रोग का इलाज भी संभव हुआ है। योग के द्वारा न केवल शरीर को स्वस्थ रखा जा सकता है बल्कि मन को भी स्वस्थ रखा जा सकता है, जिससे व्यक्ति की आध्यात्मिक उन्नति होती है। इसलिए अपने जीवन में योग को अपनाकर हम अपने आपको और दूसरों को भी प्रेरित कर सकते हैं, क्योकि स्वस्थ व्यक्ति द्वारा ही स्वस्थ समाज का निर्माण होता है।

## दक्ष प्रशासन

वर्तमान समय में सभी सरकारों की मुख्य समस्या है, प्रशासन में भ्रष्टाचार एवं लालफीताशाही, जिससे हम आज सब पीढ़ित हैं। प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या प्राचीन भारत हमें प्रशासन सुधारने का कोई उपाय सुझाता है। इसका उत्तर मौर्य कालीन प्रशासनिक व्यवस्था में ढूंढा जा सकता है। मौर्यकालीन प्रशासन अपने समय का सबसे विस्तृत एवं दक्ष प्रशासन माना जाता है। मौर्य काल में मंत्रियों को तीर्थ कहा जाता था और अधिकारियों को अध्यक्ष। प्रशासन को अलग-अलग विभागों में बांटा गया था और हर विभाग एक अध्यक्ष के नियंत्रण में था। प्रशासनिक अधिकारियों को अपने कार्यों के प्रति जिम्मेदार बनाया गया था। उदहारण के लिए सन्निधाता जो मौर्यकाल में कोषाअध्यक्ष था,ख़ज़ाने में यदि उसकी वजह से कोई भी घाटा होता था, तो वह स्वयं भरपाई करता था। प्रशासन की दक्षता का सबसे बड़ा कारण था, कुशल गुप्तचर व्यवस्था। यह गुप्तचर शासकों को राज्य में होने वाली हर गतिविधि की जानकारी देते थे। शासक इन्हीं गुप्तचरो पर सबसे ज्यादा विश्वास करते थे और इन्ही के माध्यम से अपनी जनता से जुड़े रहते थे और लोगों की समस्याओं का उचित समाधान कर पाते थे।

## शांतिपूर्ण सह अस्तित्व

वर्तमान समय की सबसे बड़ी समस्या, जो आज पूरे भारत को अपनी चपेट में लिए हुए हैं वह है धर्म के प्रति लोगों में बढती हुई असहिष्णुता की भावना। हम सभी सब जानते हैं कि भारत भिन्न-भिन्न धर्मों की भूमि रहा है। प्राचीन समय से ही यहां पर कई धर्मों के लोग एक साथ रहते आए हैं। लेकिन वर्तमान समय में लोगों के बीच धार्मिक कट्टरता बढ़ती जा रही है। इसका एक कारण हैराजनेताओं द्वारा तुष्टिकरण की नीति, जो अपनी सत्ता बचाने के लिए लोगों में जातिवाद तथाधार्मिक कट्टरता को बढ़ावा देते हैं। अशोक महान की धम्म नीति इस समस्या का सबसे उत्तम समाधान प्रस्तुत करती है। अशोक मौर्य का साम्राज्य पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में फैला हुआ था। इतने बड़े साम्राज्य पर नियंत्रण करना कोई आसान कार्य नहीं था। लेकिन अशोक ने अपनी सूझबूझ एवं विवेक का इस्तेमाल करके इतने बड़े साम्राज्य पर न केवल नियंत्रण किया बल्कि लोगों में धार्मिक सौहार्द्र भी स्थापित किया। अशोक ने

युद्ध नीति को त्यागकर शांति को अपनी सबसे बड़ी नीति बनाया। कलिंग युद्ध के पश्चात अशोक ने कोई युद्ध न लड़ा। आज पूरी दुनिया तीसरे विश्व युद्ध की कगार पर खड़ी हुई है। छोटे-छोटे विवाद भी युद्ध का कारण बनते नजर आ रहे हैं। दुनिया के सभी देश ज्यादा से ज्यादा अस्त्र शस्त्रों के भंडारण पर जोर दे रहे हैं, जिससे एक दूसरे के प्रति शंका और भी ज्यादा गहरी होती जा रही है। और ये बात हम भली भांति जानते है कि ये शंका ही दोनों विश्व युद्धों की जननी रही है । अशोक की धम्म नीति पूरी दुनिया के लिए एक सीख है कि किस प्रकार बिना युद्ध लड़े भी पूरी दुनिया में शांति स्थापित की जा सकती है, और अर्थव्यवस्था को विकास के मार्ग पर अग्रसर किया जा सकता है। इतिहास गवाह है कि युद्धो ने हमेशा विनाश ही किया है। शांति एवं स्थिरता ही विकास की कुंजी है।

**स्थानीय स्वायत्तता**

प्राचीन भारत में स्थानीय प्रशासन काफी हद तक स्वतंत्रत था । वैदिक कालीन संस्थाएं, सभा और समिति लोकतांत्रिक संस्थाएं थी। यह दोनों समितियां राजा का चुनाव करती थी एवं उस पर नियंत्रण रखती थी। ग्रामीण प्रशासन को संभालने की पूरी जिम्मेदारी इन्हीं दोनों संस्थाओं के पास थी। जिनकी सदस्य स्त्री भी हो सकती थी । इसी प्रकार मौर्यकालीन प्रशासन ने भी स्थानीय तत्वों का समायोजन किया गया था । ग्रामीणप्रशासन गांव के मुखिया के हाथ में होता था। उसकी अनुमति के बगैर जमीन की खरीद-फरोख्त नहीं की जा सकती थी । नगरीय प्रशासन में व्यवसायियों को भागीदारी का मौका दिया जाता था । उदाहरण के लिए पाटलिपुत्र के शासन में शिल्पीयों को भी शामिल किया गया था । आज भी प्रशासन की कुशलता के लिए सत्ता का विकेंद्रीकरण परम आवश्यक है।

संक्षेप में कहा जा सकता है। कि प्राचीन भारत की उपलब्धियों से सीख लेकर वर्तमान की कई समस्याओं का समाधान निकाला जा सकता है । जैसे कि हड़प्पा सभ्यता की नगर योजना एवं सफाई व्यवस्था से हम अपने शहरों को नियोजित एवं साफ रख सकते हैं । इसी प्रकार वैदिक ज्ञान के आधार पर वैज्ञानिक जीवन पद्धति अपनाकर हम अपने आप को तनाव से मुक्त रखकर और योग का पालन करके अपने आप को स्वस्थ रख सकते हैं । प्रशासन के क्षेत्र में भी प्राचीन काल का योगदान किसी भी प्रकार से कम नहीं है । आज के समय में भी ख़ुफ़िया विभाग उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि प्राचीन काल में था । अतः कहा जा सकता है कि प्राचीन भारत नए भारत के निर्माण के लिए अतुलनीय एवं प्रेरणादायक है ।

**संदर्भ**

1. प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास : डॉ. जय शंकर मिश्र
2. प्राचीन भारत के परिचय : राम शरण शर्मा
3. एन सी इ आर टी : मार्च २००५